मनुष्य आत्मा का पुनर्जन्म मनुष्य योनि में ही होता है

पुनर्जन्म का सिद्धांत:- इस सिद्धांत के अनुसार "जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है, वैसे ही मरने वाले का जन्म भी निश्चित होता है"। श्रीमद्भगवत गीता भी यही दर्शाती है:

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युरध्रुवम जन्म मृतस्य च।
तस्माद्परिहारये एर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥
(अध्याय-2, श्लोक-27)

इसका अर्थ है कि जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है और मरने वाले का जन्म भी निश्चित है, इसीलिए इसी बात पर शोक करना उचित नहीं है।

गीता के उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट होता है कि हम इस नाशवान शरीर से भिन्न एक शाश्वत और सनातन आत्मा हैं। जन्म और मृत्यु केवल शरीर रूपी वस्त्र को बदलने की प्रक्रिया मात्र है। जब शरीर जीर्ण होता है या किसी अन्य कारण से अनुपयोगी हो जाता है, तो आत्मा शरीर छोड़ देती है। इस घटना के लिए "मृत्यु" शब्द का प्रयोग किया जाता है। शरीर छोड़ने के बाद आत्मा निश्चित रूप से माँ के गर्भ में विकासशील भ्रूण में प्रवेश करती है और नियत समय पर एक पूर्ण विकसित बच्चे के रूप में माँ के गर्भ से बाहर आकर संसार में प्रवेश करती है। इस घटना के लिए "जन्म" शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह आत्मा के नए शरीर में एक नए जीवन की शुरुआत है। शरीर छोड़ने के बाद भी, आत्मा अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं जैसे की संस्कार, स्वभाव, आदत, दृष्टिकोण, आदि को बनाए रखती है। जो दूसरे नए जन्म में भी उसके विचारों, वाणी, गुणों, आचरणों और व्यवहारों से प्रकट होता रहता है।

इस सृष्टि ड्रामा के चक्र में आत्मा अनेक जन्म लेती है। इस सृष्टि नाटक के प्रारम्भ में सतयुग और त्रेतायुग के जन्मों में आत्मा सतोप्रधान होती है। चक्र के मध्य में द्वापरयुग के कुछ जन्म रजोगुण में व्यतीत होते हैं और चक्र के अंतिम युग के जन्मों में आत्मा तमोगुणी हो जाती है। मनुष्य आत्मा विश्व नाटक के एक चक्र में, जिसे कल्प कहा जाता है, न्यूनतम एक से लेकर अधिकतम 84 जन्म लेती है।

मनुष्य आत्मा मनुष्य योनि में ही पुनर्जन्म लेती है:-

मनुष्य की आत्मा एक बीज रूप होने के कारण मृत्यु के बाद मनुष्य के रूप में ही पुनर्जन्म लेती है। पशु, पक्षी या अन्य योनि में जन्म लेने का प्रश्न ही नहीं उठता। यह सिद्धांत परामनोविज्ञान (Parapsychology) में कई प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया गया है। दुनिया में ऐसे भी कई मामले सामने आए हैं जिनमें कुछ व्यक्तियों, खासकर बच्चों को, अपने पिछले जन्मों की याद आ जाती है या पिछले जीवन की कुछ घटनाओं की यादें ताजा हो जाती हैं। इन घटनाओं को "पिछले जन्म का प्राकृतिक

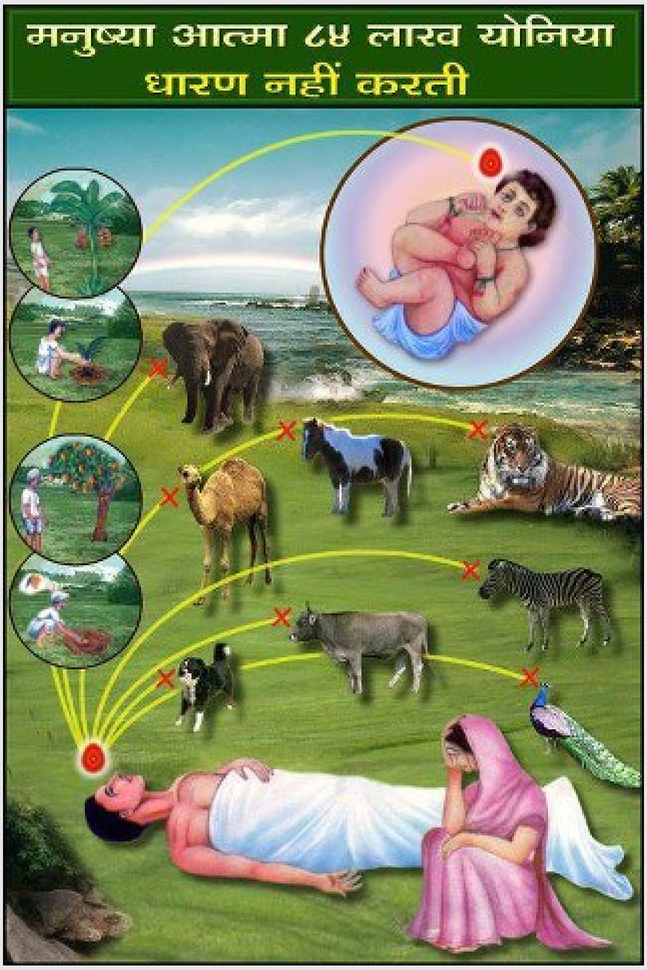

स्मरण" (Natural Recall of Past Birth) के रूप में जाना जाता है। ऐसे मामलों का विस्तृत अध्ययन हमारे देश के साथ-साथ विदेशों में भी कई परामनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया है। यह इस तथ्य का समर्थन करता है कि जन्म से पहले जीवन था और मृत्यु के बाद भी जीवन है, जिसका अर्थ है कि आत्मा का पुनर्जन्म निश्चित है। इसके अलावा, सभी मामलों में सभी का अगला पिछला जन्म मनुष्य के रूप में ही था। इससे यह भी सिद्ध होता है कि मनुष्य, मनुष्य के रूप में ही पुनर्जन्म लेता है।

मनोविज्ञान की कुछ तकनीकों के माध्यम से, जिनमें प्रोग्रेसिव हिप्नोटिक रिग्रेशन महत्वपूर्ण है, व्यक्ति को कृत्रिम निद्रावस्था में ले जा कर उन्हों से पिछले जन्मों का वर्णन करवाया जाता है। अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों में इस तरह के कई प्रयोग किए जा रहे हैं। जिसमें "जेन इवांस" नामक महिला का मामला उल्लेखनीय है। अर्नेल बॉक्सहैम नाम के एक हिप्नोथेरेपिस्ट ने जेन इवांस पर अपने पिछले 6 जन्मों को याद कराने के लिए हिप्नोटिक रिग्रेशन का प्रयोग किया था। सम्मोहन के ऐसे लगभग 400 सफल प्रयोग बॉक्सहैम द्वारा किये जा चुके हैं, जिनमें से जेन इवांस का मामला महत्वपूर्ण माना जाता है। इवांस ने अपने सभी छह जन्मों को मनुष्य के रूप में ही वर्णित किया है। ऐसे अध्ययनों से प्राप्त जानकारी आत्मा के अस्तित्व के साथ-साथ उसकी अमरता का भी समर्थन करती है। यह अध्ययन पुनर्जन्म के साथ-साथ इस तथ्य का समर्थन करता है कि मानव आत्मा मानव योनि में ही जन्म लेती है। यह भी दावा किया जाता है कि मनुष्य आत्मा द्वारा कई जन्मों की निभाई गई भूमिका स्थायी रूप से मानव आत्मा में दर्ज रहती है। इसीलिए पिछले जन्मों को हिप्नोटिक रिग्रेशन के माध्यम से और भविष्य के जन्मों को हिप्नोटिक प्रोग्रेसन के माध्यम से जाना जा सकता है।

मानव आत्मा के सभी जन्म कर्म के सिद्धांत के अधीन हैं। आत्मा को अपने कर्मों का फल मनुष्य के रूप में सुख या दुख के रूप में भोगना ही पड़ता है। सतोगुणी जन्मों में परम सुख की अनुभूति होती है और तमोगुणी जन्मों में दुःख की अनुभूति होती है। वृद्धावस्था में मनुष्य का जीवन निष्क्रिय और नीरस हो जाता है और कुछ करने की क्षमता का अभाव होता हैं। ऐसे समय में मृत्यु मनुष्य के लिए एक वरदान है। मृत्यु मनुष्य को एक नया जीवन देती है जो आनंद, उत्साह,

प्रेम, प्रसन्नता और ताजगी से भरा होता है। किसी भी आत्मा का योनि परिवर्तन संभव नहीं है। क्योंकि आत्मा बीज के समान है और जैसा बीज होता है वैसा ही वृक्ष और फल होता है। उदाहरण के लिए, यदि आम का बीज बोया जाए तो हमें फल के रूप में आम ही मिलता है, चीकू नहीं। हर योनी की चेतना बिज रूप है और हरेक की अपनी अपनी क्षमताएं होती है। एक कोशीय जिव की चेतना वा पक्षी की चेतना वा मनुष्य की चेतना की क्षमताएं एक नहीं हो सकती। इस सन्दर्भ में हर विभिन्न योनी की चेतना अपनी ही योनी में पुनर्जन्म प्राप्त करती है। उदाहरण रूप जब तोता मरता है तो उसकी चेतना तोते के रूप मे ही पुनर्जन्म लेती है।

हर योनी की चेतना को अपने कर्मो का फल अपनी ही योनी में पुनर्जन्म लेकर भोगना होता है। इसलिए यह मानना कि कर्म फल भोगने के लिए योनि परिवर्तन होता है वह सही नहीं है। यदि मान लिया जाए कि मनुष्य की आत्मा कोई विकर्म करती है और उसे भोगने के लिए उसे पशु वा पक्षी बनना पड़ता है तो फिर किसी को भी मनुष्य के रूप में रोग, शोक, दुःख, अशांति, पीड़ा नहीं होनी चाहिए। लेकिन आज हम देख रहे है ही मनुष्य ही सब से ज्यादा संवेदनशील होने के कारण सब से ज्यादा दुःख अशांति की अनुभूति करता है।

दूसरी बात, पशु पक्षी की योनी को दुःख भोगने की योनी मानना भी योग्य नहीं है। क्योंकी यदि पालतू कुता वा बिल्ली का उदाहरण लिया जाय तो आज के कई मनुष्यों से उनका जीव बेहतर है। हर चेतना वा आत्मा को अच्छे या बुरे कर्मों का फल अपनी ही योनि में भोगना पड़ता है। मनुष्य का जीवन अपने कर्मो के कारण पशु समान वा उससे भी बदतर हो सकता है लेकिन वो पशु वा पक्षी नहीं बनता ।

------- O ------- O -------

ब्र. कु. प्रफुल्लचंद्र

सानडिएगो : यु एस ए

WhatsApp: +91 98258 92710